एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

चने की फसल के प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

(*पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत)
कृषि अनुसंधान केंद्र, श्रीगंगानगर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhawatpushpendar@gmail.com

रबी की दलहनी फसलों में चना राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों तथा कृषकों का सर्वाधिक ध्यान आकर्षण का केंद्र है। यही कारण है कि चने का महत्व एक अच्छी आमदनी वाली फसल के रूप में उभर कर सामने आया है। भारत विश्व का सबसे अधिक चना (लगभग 75%) उत्पादन करने वाला देश है। सारे भारत का लगभग तीन चौथाई उत्पादन क्रमशः 3 राज्यों मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में होता है। राजस्थान चना उत्पादक राज्य में भारत में तीसरे स्थान पर है।

चने के रोग तथा रोग प्रबंधन

चने में उखटा रोग (विल्ट)

रोगाणु: ***फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम-*** उखेड़ा रोग फफूंद के कारण होता है जोकि मृदा तथा बीज जनित है। आमतौर पर यह रोग अंकुरित पौधों व फूल खिलने की अवस्था में पौधों को प्रभावित करता है। बिजाई के 3 हफ्तों बाद इसके लक्षण अंकुरित पौधों पर देखे जा सकते है। पत्ते पीले पड़ जाते है और सूख जाते हैं। पौधों के मुरझाने के साथसाथ पत्ते भी गिर जाते हैं।- इस रोग का प्रभाव खेत में अलग-अलग जगह छोटे-छोटे पेचैज में दिखाई देता है। प्रारंभ में पौधे की ऊपरी पत्तियां मुरझा जाती है। वह धीरे धीरे पूरा पौधा सूख कर मर जाता है। जड़ के पास तने को चीर कर देखने पर वाहक उत्तको में कवक जाल धागेनुमा सफेद भूरे रंग की संरचना के रूप में दिखाई देता है।

नियंत्रण

- फसल चक्र अपनाएं।
- रोग रोधी किस्म आरएसजी 888 आरएसजी 896 की बुवाई करें।
- बीजों को कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम या ट्राइकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।
- 4 किलोग्राम ट्राइकोडरमा को 100 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई से पहले प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाएं।
- खड़ी फसल में रोग के नियंत्रण के लिए कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी 0.2 प्रतिशत गोल का पौधों की जड़ क्षेत्र में छिड़काव करें।
- खेत में अधिक मात्रा में हरी व जैविक खाद डालें।
- जिन खेतों में उखेडा की ज्यादा समस्या है वहां चने की बिजाई 3 से 4 साल तक बंद कर देनी चाहिए।
- चने की गहरी बुवाई (8 से 10 सेंटीमीटर गहरी) खेत में उखेड़ा की समस्या को कम कर देती है।

चने का स्क्लेरोटिनिया तना सड़न रोग

रोग के लक्षण सबसे पहले लंबे धब्बे के रूप में तने पर दिखाई देते हैं। जिन पर कवक जाल के रूप में दिखाई देता है। उग्र अवस्था में तनाव फट जाता है। वह पौधा मुरझा कर सूख जाता है। संक्रमित भाग पर काले गोल कवक के स्क्लेरोसिस दिखाई पड़ते हैं।

नियंत्रण

- बीजों को कार्बेंडाजिम+मैनकोज़ेब (साफ) 2 ग्राम या ट्राइकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।
- खड़ी फसल में बुवाई के 50 से 60 दिन बाद रोग के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेंडाजिम+ मैनकोज़ेब 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- रोगी पौधे को उखाड़कर नष्ट कर दें।
- रोग रोधी किस्मों की बिजाई करें।

चने में ऐस्कोकाइटा अंगमारी रोग

रोगाणुः *एस्कोकाइटा राबिए-* यह रोग बीज जनित फफूंद की वजह से होता है। यह बीज व भूमि जनित रोग है। जिसका फैलाव वायवीय फफूंद स्पोर पिक्निडिऑ स्पोर के कारण होता है। रोग के लक्षण फरवरी-मार्च में दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों के तने पत्तियों व फलियों पर छोटे गोल व भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। आमतौर पर यह रोग फूल खिलने व फली बनने की अवस्था में पौधों पर दिखाई देते है। इस रोग के विशिष्ट लक्षण गोलाकार व लम्बे धब्बों के रूप में देखे जा सकते है। ये अनियमित धब्बे भूरे रंग के व लाल रंग के किनारों से घिरे होते हैं।

नियंत्रण

- बीजों को कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैनकोज़ेब 75 डब्ल्यूपी 2 ग्राम या कॉपर
- ऑक्सिक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- रोग प्रतिरोधक किस्में जैसे कि सी-235, एच सी-3 उगायें।
- केवल प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें।
- संक्रमित पौधों व उनके अवशेषों को नष्ट करे दें।3 से 4 साल का चने की खेती के लिए फसल चक्र अपनायें।

चने का अल्टरनेरिया झुलसा रोग

रोगाणुः *अल्टरनेरिया अल्टरनेटा-* यह रोग बीज व मिट्टी जनित है और इसके लक्षण फूल खिलने व फली बनने के समय पर देखे जा सकते है। इस रोग में विरल फली बनना व पत्तियों का झड़ना सामान्य है। शुरू में जलयुक्त बैंगनी रंग के धब्बे जो कि बदरंग व अनिश्चित आकार के होते है। पत्तियों को घेर लेते हंै। बाद में ये धब्बे गहरे भूरे रंग के हो जाते है और आपस में जुड़ कर पूरे पत्ते पर फैल जाते हैं। फलियों पर गोलाकार, धंसे हुए व अनियमित रूप से बिखरे हुए धब्बे दिखाई देते है।

रोग प्रबधंन

- खेत को साफ सुथरा व रोग ग्रस्त पौधों से मुक्त रखें।
- पौधों के बीच की दूरी को अधिक रखें।
- फसल की अधिक वानस्पतिक वृद्धि न होने दें।
- अंतर फसल के लिए अलसी का प्रयोग करें।
- खेत में अधिक पानी न दें।
- रोग रोधी किस्मों जैसे गणगौर की बुवाई करें।
- किसानों को कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।

- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैनकोज़ेब 75 डब्ल्यूपी 2 ग्राम या कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी 3 ग्राम प्रति लीटर पानी किदर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

चने में जड़ गलन रोग

खड़ी फसल में स्वस्थ पौधों के बीच संक्रमित पौधे सूख कर मर जाते हैं। रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़कर देखने पर जड़ व तने के जुड़ाव वाले स्थान से फफूंद की सफेद वृद्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण

- फसल चक्र अपनाएं।
- रोग रोधी किस्मों जैसे आरएसजी 896 आरएसजी 888 व आरएसजी के 6 की बुवाई करें।
- बीजों को कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी 2 ग्राम या ट्राइकोडर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें।
- खड़ी फसल में रोग को नियंत्रण करने के लिए कार्बेंडाजिम 50 डब्ल्यूपी का 0.2 प्रतिशत घोल का पौधों की जड़ क्षेत्र में छिड़काव करें।